नवाबी भोपाल में महिला शिक्षा का विकास

नेहा सिन्हा, रिसर्च स्कालर इतिहास, बरकतुउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
शोध केंद्र : माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रघालय एवं शोध संस्थान भोपाल म.प्र.
Email: - namit.shrivastava@gmail.com
Contact No. : 9039520734

सारांश :

भोपाल रियासत एक ऐसी रियासत हे जहॉ बेगमों ने शासन किया था। शिक्षा के विकास में इनका महत्वपुर्ण योगदान था। विशे ाकार नवाब सुल्तानजहॉ बेगम का जोकि भोपाल रियासत की अंतिम महिला शासिका थी तथा जो स्वयं भी एक विदृषी महिला थी। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा की ओर विशेष रूप से योगदान दिया था। बेगम ने लडकियों के लिए रियासत में कई स्कूल स्थापित किये जैसे सुल्तानिया स्कूल सिकन्दरी स्कूल, ब्रिजीसिया कन्या पाठशाला, महिला व्यवसायिक स्कूल, लेडी मिन्ते नर्सिग स्कूल, आदि अतः भोपाल के नवाब एवं बेगमों ने भोपाल के इतिहास में अपने नाम को सदा के लिए अमर कर दिया।

शब्द कुंजी : महिला शिक्षा, लेडिस क्लब, नसिर्ग स्कूल, महिला ाासिका

परिचयः

भोपाल नवाबो की नगरी के नाम से जाना पहचाना जाता है। नावाबी दौर में कई नवाब आये उनमें महिला शासिकायें भी थी, जिनके योगदान को कभी भोपाल का इतिहास भुला नही पायेगा। इनमें से एक ऐसी ही कुशल व्यक्तित्व की अंतिम महिला शासक थी नवाब सुल्तनजहॉ बेगम । उन्होंने महिला शिक्षा के विकास के लिए अथक प्रयास किऐ। नवाब सुल्तानजहॉ बेगम यह भंलिभाति समझती थी कि शिक्षित समाज जागरूकता का प्रतिक होता है। अतः उन्होने विशष रूप से महिलाओ को शिक्षित करने एवं विभिन्न क्षेत्रों मे उन्हे प्रशिक्षित करने का बेडा उठाया ।

भोपाल रियासत में महिला शिक्षा का विकास :

भोपाल रियासत की बेगमो ने महिलाओं की स्थिती में सुधार लाने तथा उन्हे शिक्षित करने के लिए विशेष प्रयास किये। विशेषकर नवाब सुल्तानजाहॉ बेगम के काल में महिला शिक्षा का अभूतपूर्व विकास हुआ। उनका विचार था – ^^Education to my mind it the best ornament of a women**

नवाब सुल्तानजहॉ बेगम ने शिक्षा में आने वाली रूकावटो को दूर करने का प्रयास किया । लडकियों को स्कूल से लाने ले जाने के लिए बंद वाहनों की व्यवस्था की तथा योग्य शिक्षिकाओं की नियुक्ति की। उन्होंने सन् 1918 ई.में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा अधिनियम लागू किया। नवाब बेगम ने गरीब, निर्धन और

विधवा औरतो जहॉ प्रतिदिन में काम आने वाली वस्तुओं को बजाने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था, ताकि वह अपनी रोजी रोटी स्वयं जुटा सकें।

सन 1905 ई. में एक आर्ट स्कुल का निर्माण किया गया था। यहॉ महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के उद्देश्य से हस्तकला की विभिन्न प्रकार की शाखाएॅ खोली गई थी। सन 1924 ई.में. इस विद्यालय की 5 शिक्षिकाओं को विशेष प्रकार की कढाई 'कलावत्तु तथा सितारा का काम के लिए भेजा गया था। 1926 ई तक इस स्कूल में उद्योग की 12 शाखाये चलने लगी थी।

नवाब सुल्तानजहां बेगम रियासत भोपाल में व्याप्त अशिक्षा को दूर करना चाहती थी, अतः उन्होंने रियासत में कई स्कूलों की स्थापना करवाई तथा लड़कियों का स्कूल खोलने हेतु उचित कदम उठायें,नवाब बेगम द्वार। लडकियों के लिए कई स्कुल स्थापित किये गऐ। जैसे – सुल्तानिया स्कुल इसका निर्माण 1903 में किया गया था। 'सिकन्दरी स्कूल यह शाही राजधरानो की लडकियों के लिए स्थापित किया गया था। नवाब सुल्तानजहॉ बेगम धर्म – जाति से परे थी इसलिए उन्होंने हिन्दु लडकियों के लिए 1907 ई. मे. ब्रिजीरिया कन्या पाठशाला का निर्माण करावाया।

नवाब सुल्तानजहां बेगम अपनी आत्मकथा एन एकाउंट ऑफ माई लाइफ में लिखती हैः– महिलाओं को केवल पढ़ना–लिखना सिखाना उसके बाद उन्हें उनके हाल पर छोड़ देना एक बहुत मुर्खतापूर्ण बात हैं। वह चाहती थी कि महिलाओं को उनके जीवन से जुड़े समस्त पहलुओं से अवगत कराया जाये तथा उनकी आत्मा को जगाया जाये, एवं घरेलु विषयों के साथ ही आर्थिक ज्ञान भी उनके स्कूली पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये।''

इस प्रकार नवाब सुल्तानजहां बेगम यह चाहती थी कि महिलाओं को शिक्षा के द्वारा इस प्रकार 12का प्रशिक्षण दिया जाये कि परिपक्व लड़की आने वाले समय में एक योग्य माँ एवं गृहणी बन सकें तथा भविष्य की पीढ़ी के लिये राष्ट्रीयता एवं संस्कृति के बीज बो सके।

नवाब बेगम ने महिलाओं को आत्म – निर्भर बनाने तथा नसिर्ग को एक करियर के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से लेडी मिन्ते नसिर्ग स्कूल की स्थापना की। लेडी मिन्टों ने भारत में नर्सिंग कला के विकास के लिए बहुत प्रयास किये थे, अतः नवाब सुल्तानजहां बेगम ने उनकी स्वीकृति लेकर उनके नाम से लेडी मिन्टों नर्सिंग स्कूल की स्थापना की थी। इस स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को मरीजों की तीमारदारी की शिक्षा दी जाती थी। इसी के साथ इसमें दाइयों की शिक्षा का भी प्रबंध था। इसके पश्चात् उन्हें मनद भी प्रदान की जाती थी।

बेगमात् भोपाल यह भलिभाति समसती थी कि अनुभवहीन दाईयों के कारण महिलाओं अनेक कष्ट झेलने पड़ते है। इसलिए उन्होने दाईगिरी की व्यवस्थित शिक्षा देने के लिए दाईगिरि प्रशिक्षण केंन्द्र स्थापित किये।

प्रशिक्षण के पश्चात् उन महिलाओं को प्रमाण–पत्र प्रदान किये जाते थे जो इस कला में पूर्णरूप से सक्षम हो चूकि थी। इसके साथ यह भी व्यवस्था की गई थी, जिन लोगों को दाई की आवश्यकता हो तो वह सीधे महिला चिकित्सक से आवेदन करें इन सुधारों का परिणाम बहुत सुखद रहा।

नवाब सुल्तानजहां बेगम द्वारा महिलाओं को घरों की चार दीवारी से बाहर लाने के लिए तथा महिलाओं के विकास व उत्थान के लिए एक महिला क्लब की स्थापना की गई थी, जिसे 'प्रिन्स ऑफ वेल्स लेडीज़ क्लब के नाम से जाना था। लेडीज वल्ब की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं को स्वतंत्र एवं आत्म–निर्भर बनाना, महिलाओं को घर की चार–दीवारी से बाहर निकालना, उनक अंदर छिपी शक्ति तथा कला को उभारकर उनके व्यक्तित्व का विकास करना था।

निष्कर्ष : –

नवाब सुल्तानजहां बेगम सही अर्थों में रियासत भोपाल की प्रजा के विकास की शुभचिंतक थी। यदि नवाब सुल्तानजहां बेगम भोपाल रियासत की महिलाओं की शिक्षा की ओर ध्यान नहीं देती तो भोपाल के इतिहास में महिला शिक्षा की कहानी कुछ और ही रूप में लिखी जाती है शिक्षा को उनकी बुलन्दियों तक पहुँचाने का कार्य उन्होंने बखूबी किया।

संदर्भिका

1 Mittal Kamla	History of Bhopal State	Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., 1990

2 Shrivastava P.N. & S.D. Guru, Madhya Pradesh District Gazetteers, Sehore & Bhopal

3 एनुअल एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, गवर्मेन्ट ऑफ भोपाल – 1917–18

4 बेगम सुल्तानजहां – गौहर–ए–इकबाल

बेगम सुल्तानजहां – एन एकाउन्ट ऑफ माई लाईफ